

गुजारी का विवरण रहता है 2. मल्लाह, माँझी, केवट।

खेवटिया पुं. (देश.) खेवट, मल्लाह, केवट।

खेवनहार पुं. (देश.) 1. खेने वाला, मल्लाह, केवट 2. ठिकाने तक पहुँचाने वाला, पार लगाने वाला।

खेवा पुं. (देश.) 1. नाव से पार उतरने के बदले दी जाने वाली मज़दूरी, पारिश्रमिक, किराया आदि 2. नदी पार करने का कार्य 3. नाव की खेप 4. अवसर, वार 5. बोझ से दबी नाव।

खेवाई स्त्री. (देश.) 1. नाव खेने का काम, नाव संचालन 2. नाव खेने की मज़दूरी 3. डाँड को नाव से बाँधने के लिए प्रयुक्त रस्सी।

खेवैया पुं. (देश.) खेने वाला, केवट, नाव खँकर पार ले जाने वाला व्यक्ति।

खेस पुं. (देश.) एक तरह की मोटे सूत की चादर।

खेसर पुं. (तत्.) खच्चर।

खेसारी स्त्री. (देश.) एक प्रकार की मटर, जिसकी फलियाँ चिपटी होती हैं जिसकी दाल बनती है, चिपटैया मटर।

खेह स्त्री. (देश.) 1. धूल मिट्टी, राख मुहा. खेह खाना- धूल फाँकना, व्यर्थ समय खोना।

खँचनी स्त्री. (देश.) औजार साफ करने की लकड़ी कल तख्ती।

खँचातान स्त्री. (देश.) खँचतान।

खँचातानी स्त्री. (देश.) खँचतान।

खैता पुं. (देश.) जवान बछड़ा जिसे अभी हल आदि में जोता न गया हो, नाटा बछड़ा।

खैबर पुं. (देश.) भारत और पाकिस्तान के बीच पड़ने वाला एक दर्रा जो उस दिशा से भारत का मुख्य प्रवेश द्वार है।

खैयात पुं. (अर.) दर्जी, सूचीकार, सिलाई करने वाला।

खैयाम पुं. (अर.) 1. खेमा बनाने वाला 2. तंबू बनाने वाला 2. फारसी का प्रसिद्ध कवि उमर खैयाम।

खैर पुं. (तद्.) 1. बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी लकड़ी को उबालकर कत्था बनाते हैं, और उसे चूने के साथ लगाकर खाया जाता है 2. भूरे रंग का एक पक्षी स्त्री. (फा.) कुशलक्षेम,

भलाई अव्य (फा.) 1. अस्तु 2. अच्छा, ऐसा ही सही, कोई चिंता नहीं, देखा जाएगा।

खैर माही स्त्री. (फा.) भलाई सोचना, शुभ चिंतक।

खैर ख्वाह वि. (फा.) भलाई चाहने वाला, शुभ चिंतक।

खैरा वि. (तद्.) कत्थई, खैर के रंग के कत्थई रंग का कबूतर या घोड़ा पुं. (देश.) 1. धान की फसल का एक रोग, जिसमें उसकी बाल पीली पड़ जाती है 2. तबला बजाने में एक ताल (ताल) की धुन स्त्री. (देश.) एक प्रकार की मछली जो बंगाल की नदियों में पाई जाती है।

खैरात पुं. (अर.) पुण्य कर्म, दान-पुण्य।

खैराती वि. (फा.) खैरात का, धर्मार्थ संचालित, मुफ्त का जैसे- खैराती दवाखाना, खैराती माल, खैराती अस्पताल।

खैरियत स्त्री. (फा.) 1. कुशल क्षेम, राजी खुशी 2. भलाई, कल्याण।

खैल पुं. (अर.) समुदाय, जमावड़ा, जन समूह।

खैला स्त्री. (अर.) फूहड़, मूर्खा, बोडम स्त्री।

खैला स्त्री. (तद्.) मथानी।

खोंखना अ.क्रि. (देश.) खोंसना।

खोंगा पुं. (देश.) रुकावट, अटकाव।

खोंच स्त्री. (देश.) 1. किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात 2. किसी नुकीली चीज में फँस कर कपड़े आदि का कट जाना ला.अ. दोष, आरोप।

खोंचा पुं. (देश.) 1. बहेलियों का वह बांस जिसके सिरे पर लासा लगाकर वे पक्षियों को फँसाते हैं 2. पेड़ों से फल तोड़ने की लगघी।

खोंचा पुं. (फा.) वह थाल जिसमें फेरी वाले मिठाइयाँ आदि रखकर बेचते हैं, खोंमचा।

खोंचिया पुं. (देश.) 1. खोंची लेने वाला 2. भिक्षुक, भिखमंगा।

खोंची स्त्री. (देश.) वह अन्न, तरकारी आदि जो दुकानदार मंडी या बाजार में छोटी सेवाएँ करने वालों या भिखमंगों को देते हैं।

खोंटना स.क्रि. (देश.) 1. पौधों आदि के ऊपरी भाग को चुटकी से दबाकर तोड़ना 2. टुकड़े-टुकड़े करना 3. नोंचना।